दिनांक :- 06-04-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

वर्ग :- B.A Part (I) प्रतिष्ठा इतिहास (History Honours)

मेहरगढ़ की विशेषता और नव पाषाण काल --

उत्तर पश्चिम में मेहरगढ़ भी एक महत्वपूर्ण नव पाषाणिक स्थल है। यहां गेहूं की तीन व जौ की दो किस्में प्राप्त हुई हैं। यहां के लोग संभवतः खजूर का भी उत्पादन करते थे।

यहां के लोग कच्ची ईंटों के आयताकार मकान में रहते थे।

उत्तर पश्चिम में स्वात घाटी में सरायखोला एक महत्वपूर्ण स्थल था। बेलन घाटी में कुछ महत्वपूर्ण नव पाषाणकालीन स्थल निम्नलिखित है : कोलडीहवा चोपानी मांडो और महागरा।

कोलडीहवा से वन्य एवं कृषिजन्य दोनों प्रकार के चावल

के साक्ष्य मिलते है। यह धान की खेती का प्राचीनतम साक्ष्य है। इनकी कालावधि 6000 ई० पू० से 5000 ई० पू० निर्धारित की गयी है।

उसी तरह चोपानीमाडो से संसार मे मृद्भाण्ड के प्रयोग के प्राचीनतम साक्ष्य मिले है। चोपानीमांडो स्थल से नव पाषाण काल के प्रारंभिक चरण के उल्लेखनीय प्रमाण मिले है। यहां से व्यवस्थित ग्रामवास को आरंभिक प्रमाण मिले है। मध्य गंगा घाटी में भी कुछ महत्वपूर्ण नव पाषाण स्थल प्राप्त हुए है, जो निम्न है: चिरांद, (छपरा), चेचर, सेनुआर, ताराडीह आदि।

इसी तरह पूर्वी भारत में असम, मेघालय व गारो की पहाड़ी में नव पाषाणकालीन स्थल मिले है।

बेलन घाटी के तट पर चोपानीमांडो से तीन किमी० दूर स्थित महादहा से सबसे महत्वपूर्ण गोशाला के रूप में प्राप्त हुए है।

दक्षिण भारत में कुछ नव पाषाण स्थल निम्न है -

Scanned with CamScanner

कर्नाटक में मास्की, ब्रह्मगिरी, हल्लूर, कोडेक्कल, पिकलीहल, संगनकलन, टेक्कलकोटा तथा तमिलनाडु में पोचमपल्ली और आंध्र प्रदेश में उतनूर।

दक्षिण भारत में प्रयुक्त होने वाली पहली फसल रागी थी। नव पाषाण काल में कृषि यहाँ गौण ही थी। यहाँ नव पाषाण काल 1000 ई० पू० तक रहा इस समय यहाँ के लोगों यहाँ यह महापाषाणकालीन संस्कृति का उदय नव पाषाण काल में कृषि कार्य पूर्णत उपकरण में खेती एंव कुदाल का प्रयोग होता था।

ताम्रपाषाण काल तकनीकी दृष्टि से कांस्य युग से प्राचीन है। कुछ ताम्र पाषाणकालिक स्थल कांस्य युग के प्राचीन थे, कुछ उसके समकालीन थे एंव कुछ परवर्ती थे।

ताम्र पाषाण काल तकनीकी एंव सिंधु घाटी सभ्यता दोनों में पत्थर के उपकरणों का प्रयोग हुआ।